मकाइदुल शैतान

शैतान का मक्र व फरेब और उसका इलाज

मुसन्निफ
इब्ने अबिद्दुनिया

अहले सुन्नत व जमात
मिनजानिब:- रज़वी टीम, इण्डिया

”मकाइदुश्शैतान”

‘अरबी’

इब्ने अबिद्दुनिया

हाफ़िज़ अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुह़म्मद बिन उ़बैद
बिन सुफ़ियान बिन क़ैस बग़दादी क़रशी।

‘उर्दू तर्जमा’

हज़रत कैफुलवरा क़ादरी मिस्बाही साहब,
मुअल्लिम जामिया अशरफिया, मुबारकपुर
आज़मगढ़(यूपी)

‘हिन्दी तर्जमा’

10 फरवरी, 2022

रज़वी टीम, इण्डिया

अहले सुन्नत व जमात

‘मस्लके आला हज़रत’

'हम्दो सना'

तमाम ता'रीफें अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त के लिए जो तमाम जहानों का ख़ालिक़ व मालिक है। बा'दे हम्दे खुदाए त'आला बेशुमार दरूदो सलाम साहिबे लौलाक, रसूले पाक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा ﷺ पर, उनके अहले बैत पर और उनके महबूब असहाब व अइम्मा ए शरी'अत व तरीक़त पर।

'उर्दू तर्जमा'

"शैतान का मक्रो फ़रेब और उसका इलाज" मुहद्दिस इब्ने अबिद्दुनिया अलैहिर्रहमह की किताब का पहला उर्दू तर्जमा है। आपने बड़े ही इल्मी और दिलकश अंदाज़ में ये किताब अरबी ज़बान में मुरत्तब की है। जिसका ऊर्दू तर्जमा हज़रत कैफुलवरा क़ादरी मिस्बाही साहब, मुअल्लिम जामिया अशरफिया, मुबारकपुर, आज़मगढ़(यूपी) ने फरमाया। जिस पर तक़रीज़ हज़रत मुफ़्ती शम्सुलहुदा मिस्बाही साहब (ख़लीफ़ा ए बुरहाने मिल्लत अलैहिर्रहमह) ने तहरीर फरमाई। और मुक़द्दमा हज़रत मुफ़्ती महमूद अली मुशाहिदी साहब किब्ला ने रक़म फ़रमाया।

हिन्दी तर्जमा, 10 फरवरी, 2022

किताब "मकाइदुश्शैतान" का हिन्दी तर्जमा असल किताब से नहीं बल्कि उर्दू तर्जमे (शैतान का मक्रो फ़रेब और उसका इलाज) से किया गया है, जिसमें अलफ़ाज़ की कोई तब्दीली नहीं की गई बस उर्दू को हिन्दी स्क्रिप्ट में बदल दिया गया है। अल्लाह हमको इस किताब के ज़रिए शैतान की हक़ीक़त जान कर उनकी मुखालफत करने वाले यानी गुनाहो से बचने वाले बना दे।या अल्लाह! हमारी टीम की कोशिशों को क़बूल फ़रमा और हम गुनाहगारों से अपने दीन का काम ले और हमारी इस छोटी सी कोशिश को हमारे गुनाहों के कफ़्फ़ारे का ज़रिया बना दे। आमीन।

रज़वी टीम, इण्डिया

अहले सुन्नत व जमात

मस्लके आला हज़रत

ताअरूफे मुसन्निफ़

मकाइदुश्शैतान का मुख़्तसर त'अर्रुफ़

नाम और नसबः- हाफ़िज़ अबू बक्र अ़ब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन उ़बैद बिन सुफ़ियान बिन क़ैस बग़दादी क़रशी।

लक़बः- इब्ने अबिद्दुनिया।

विलादतः- 208 हिजरी को बग़दाद में पैदा हुए।

इल्मो फ़ज़्लः- आपने बग़दाद और अतराफ़ के मो'तमत औ़लमा व मशाइख़ से बड़ी तवज्जोह और ख़ुलूस के साथ इल्मे दीन ह़ासिल किया और सई ए पैहम ओ जहदे मुस़लस़ल के बाद इल्मे फ़िक़्हो हदीस में नुमायां मक़ाम हासिल करके इन उ़लूम में मुसलमानों के मरजे'अ और तिशनगाने उ़लूम के मरकज़ बने।

आप की इल्मी जलालत, फिक़्ही बस़ीरत, ह़दीस़ शनासी और आपकी सिक़ाहत व अ़दालत का ए़तराफ़ कई मुहद्दिसीन और अइम्मा ए जरह़ व ता'दील ने किया हैः-

(१). हाफ़िज़ इब्ने ह़जर अ़सकलानी ने फरमायाः इब्ने अबिद्दुनिया और स़ाहिबे तसानीफे कस़ीरह हैं।

(२). अबू ह़ातिम राज़ी ने "अल जरह़ वत्ता'दील" में फ़रमायाः इब्ने अबिद्दुनिया बग़दादी और सुदूक़ हैं।

ख़तीबे बग़दादी ने तारीख़े बग़दाद में फ़रमायाः

(३). इब्ने अबिद्दुनिया बादशाहों और ख़लीफ़ा के बच्चों को अदब सिखाया करते थे।

(४). आपके तुबह़्रे इल्मी का ए़तराफ़ करते हुए बाज़ औ़लमा ने यहाँ तक फ़रमायाः

"इब्ने अबिद्दुनिया अपने वुस'अते इल्मी के सबब जिसे चाहते हंसा देते और जिसे चाहते रुला देते"।

(५). आपके फ़ज़्लो कमाल और इल्मी दक़ीक़े सख़बी की ताईद ओ तौसीक़ अबुल क़ासिम अज़हरी के बयान करदा इस वाक़ये से होती है, वो कहते हैं जिस दिन इब्ने अबिद्दुनिया की वफ़ात हुई मैं क़ाज़ी इस्माईल

बिन इस्हाक़ के पास गया और कहाः अल्लाह त'आला आपको इज़्ज़त अ़ता फरमाए। तो क़ाज़ी साहब ने फ़रमायाः अल्लाह त'आला अबू बक्र बिन अबिद्दुनिया पर रहम फरमाए, उनके साथ इ़ल्मे कसी़र चला गया।

तसानीफ़ः- आप साहिबे तसानीफे कसी़रह हैं। आपने मुत'अद्दिद उ़लूमो फुनून पर किताबें तस्नीफ़ फ़रमा कर उम्मते मुस्लिमा को गिरां क़द्र इ़ल्मी सरमाया अता फ़रमाया, जिन में चंद ये हैं:

انزال (3) الملوك اختار (٣) المعروف اصطناع (٢) الأدب كتاب (١)
(٨) التوبة (٤) الخلفاء تاريخ (٢) والاعتبار التكفر (٥) بالله الحاجة
(١٣) النبوة دلائل (١٢) الخافقين (١١) الحكما حلم (١٠) الجوع (٩) التهجد
الصلاة (١٨) الصمت (١٧) الشكر (١٦) الزهد (١٥) الرهبان (١٣) الدنيا ذم
بعد الفرج (٢٢) الانبياء عقوبة (٢١) العزلة (٢٠) الطبقات (١٩) النبي على
(٢٦) النوادى (٢٥) الموت بعد عاش من (٢٤) الحوائج قضاء (٢٣) الشدة
اليقين۔ (٢٨) الوصايا (٢٧)والحزن الهم

इनके अलावा और भी तसानीफ मौजूद हैं।

आपके अहम शुयूख़ः-आपके शुयूख़ की ता'दाद ५०५ बताई जाती है जिन में चन्द अहम ये हैं: अह़मद बिन इब्राहीम दुरक़ी, अह़मद बिन जनाब, अहमद बिन ह़ातिम, इब्राहीम बिन सई़द जौहरी, इब्राहीम बिन अ़ब्दुल्लाह हरवी, इब्राहीम बिन मुह़म्मद बिन अ़रअ़रह, इस्माई़ल बिन इब्राहीम तर्जमान, इस्माई़ल बिन अ़ब्दुल्लाह बिन ज़रारह रक़ी, बशार बिन मूसा, बिशर बिन वलीद, सई़द बिन जुनबूर हमदानी, अ़ब्दुल्लाह बिन ह़म्माद, अबू उ़बैद क़ासिम बिन सलाम।

आपके अहम तलामिज़हः- आपके तलामिज़ह की ता'दाद १४ बताई जाती है। चन्द अहम नाम ये हैं: इब्ने अबी ह़ातिम, अह़मद बिन मुह़म्मद लिबनानी, अबू बक्र अह़मद बिन सलमान नज्जार, अह़मद बिन खुज़ैमह, अबू बक्र अह़मद बिन अ़ब्दुल्लाह शाफेई़, ई़सा बिन मुह़म्मद तूमारनी, अबुल ह़सन जौज़ी, अबू बक्र नीशापुरी, अबुल हस़न बसरी।

वफ़ातः- आपने बग़दाद शरीफ में 281 हिजरी में अपने रब की दा'वत को क़बूल फ़रमा कर दारे फ़ानी को ख़ैर आबाद कहा।

फेहरिस्त

जिन्नात की क़िस्में

हदीस नंबर (1) : हज़रते अबू दरदा रदीअल्लाहु अन्हु ने कहा कि सरकारे दो आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक ने 3 क़िस्म के जिन्न पैदा फ़रमाए हैं, पहली क़िस्म सांप, बिच्छु, जमीन के कीड़े मकोड़े हैं, दूसरी क़िस्म वह है जो फिज़ा में हवा के मांनिन्दहै, तीसरी क़िस्म वह है जिन पर हिसाब और अक़ाब वाक़ेअ़ होगा।

शैतान देखकर अज़ान दो

हदीस़ नंबर (2): हज़रते यसीर बिन उमरो रहमतुल्लाह अलैह का बयान है की हमने हज़रते उ़मर रदीअल्लाहु अन्हु के बारगाह में भूतों का तज़किरा किया गया तो आपने फ़रमाया : कोई भी उस सूरत को बदल नहीं बदल सकता जिस पर अल्लाह पाक ने उसे पैदा किया है, हां जिन्नों में कुछ जादूगर होते हैं जैसा कि इंसानो में जादूगर होते हैं तो जब तुम उनमें से किसी को देखो तो अज़ान दो (यानी भूतों को देखने के वक़्त अज़ान दो)।

जिन्नों के जादूगर गिरोह

हदीस़ नम्बर (3): हज़रते अब्दुल्लाह बिन उबैद बिन उमैर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने कहा कि नबीए पाक ﷺ से ग़ीलान के बारे में पूछा गया तो आपने फ़रमाया वह जिन्नों के जादूगर गिरोह है।

मुस्लीम जिन्नात के जरिए हिफाज़त

हदीस़ नंबर (4) : हज़रत यज़ीद बिन जाबिर ने फरमाया हर मुसलमान के घर की छत पर कोई न कोई मुस्लिम जिन्न ज़रूर होता है, जब घरवाले दोपहर का खाना खाते है तो जिन्नात भी उतर कर उनके साथ खाना खा लेते हैं और जब शाम का खाना खाते है तो उनके साथ शाम का खाना खाते है , अल्लाह पाक उनके ज़रिए (उन जिन्नात के ज़रिए) उन लोगों (घरवालों की) हिफाज़त फरमाता है।

शैतान का बिस्तर :

हदीस़ नंबर (5) : हज़रत क़ैस बिन अबू हिज़ाम ने कहा : जिस घर मे कोई बिस्तर बिछा हो और उस पर कोई सोता न हो तो उस पर शैतान सोता है।

जिन्नात आपस मे एक दूसरे को इंसान की औरतो के पीछे लगने से मना करते है:-

हदीस नंबर (6) : हज़रत हसन बिन हसन ने फरमाया मैं राबिया बिन्ते मुअव्वज़ बिन अफरा के पास एक चीज़ के मुतअल्लिक़ इस्तिफ़सार के लिए गया तो उन्होंने कहा : मैं अपनी मजलिस में बैठी थी कि अचानक मेरे घर की छत फट गई और मेरे क़रीब उस शिगाफ से ऊंट या गधे के बराबर स्याह फाम चीज़ गिरी मैने इससे पहले उस तरह की स्याह फाम और भारी भरकम चीज न देखी थी, वह कहती हैं वह चीज मुझ से क़रीब हुई और उसके साथ एक कागज़ का टुकड़ा था, मैने उसे खोला उसमे लिखा हुवा था " यह पैग़ाम इब्लीस के रब के जानिब से इब्लीस की तरफ है, नेक लोगो की नेक बीबियो पर तेरे लिए कोई गुंजाइश नही है" फिर वो चीज़ जहां से आई थी वही लौट गई और मैं उसे देख रही थी , रावी कहते है जो ख़त उनके पास था उसे उन्होंने मुझे दिखाया।

काला सांप

हदीस नंबर (7) : हज़रत यहया बिन सईद से रिवायत है उन्होंने फ़रमाया : जब हज़रत उमरह बिन्ते अब्दुल रहमान की जांकनी (मौत) का वक़्त आया तो उनके पास चन्द ताबेई तशरीफ लाए, हज़रत उरवाह बिन ज़ुबैर, क़ासिम बिन मुहम्मद और अबू सलमा बिन अब्दुल रहमान वगैरह। इन हज़रात की मौजूदगी में उमरह पर ग़शी तारी हो गई अचानक इन हज़रात ने छत के टूटने की आवाज सुनी और एक काला सांप छत से गिरा जो एक तने के मानिन्द था। वह उमरह के जानिब बढ़ने लगा इतने में सफेद कागज़ का टुकड़ा आ गिरा जिसमे लिखा हुआ था "अल्लाह के नाम से शुरू जो निहायत मेहरबान और रहम वाला, आकिब की रब की जानिब से आकिब की तरफ: तुझे नेक लोगो की बेटियों की तरफ कोई राह नहीं है" जब उसने खत देखा तो जहां से आया था वही से चला गया।

नेक बंदे की बेटी

हदीस नंबर (8) : हजरत अनस बिन मालिक रदीअल्लाहु अन्हु ने हदीस बयान की उन्होंने कहाः औफ़ बिन अफराअ की बेटी अपने बिस्तर पर लेटी थी तो उन्हें महसूस हुआ के एक हब्शी उनके सीने पर सवार हो गया है और अपना हाथ इनके हल्क़ पर रख दिया है, अचानक एक पीले कागज़ का टुकड़ा आसमान व जमीन के दरमियान उड़ते हुए इनके सीने पर आ कर गिरा, हब्शी ने उसे ले कर पढ़ा। उसमें लिखा हुआ था(लकीन के रब की जानिब से लकीन की तरफ) नेक बंदे की बेटी से परहेज़ कर, तुझे उस पर कोई राह नहीं है। तो वो उठा और अपना हाथ मेरे हल्क़ की जानिब बढ़ाया और अपने हाथ से मेरे घुटने पर मारा तो वो फूल कर बकरी के सर की तरह हो गया। वो (बिन्ते औफ) कहती है, इसके बाद मैं हज़रते आएशा रदीअल्लाहू अन्हा की ख़िदमत में हाज़िर हुई और उनसे पूरा वाकिया बयान किया तो आपने फरमायाः ऐ मेरी भतीजी! जब तुझे कोई ख़ौफ़ हो तो तू अपना कपड़ा अपने ऊपर डाल ले इंशा अल्लाह तआला तुझे कोई चीज़ हरगिज़ ज़रर न पहुँचायेगी। रावी कहते है के अल्लाह ताला ने इनको इनके वालिद के सबब बचा लिया, उनके वालिद मारकए बदर में शहीद हुए थे।

शैतान के मक्रो फ़रेब से बचने वाला :-

हदीस नम्बर (9): हज़रते अब्दुर्रहमान बिन ज़ैद बिन असलम ने कहाः दो शख़्स मक़ामे अशज'अ से अपनी दुल्हन के पास आ रहे थे। एक मक़ाम पर एक औरत उनके पास आई और उसने कहाः तुम दोनों का क्या इरादा है? वो लोग कहने लगे हम अपनी औरत के पास जा रहे हैं। उस औरत ने कहाः मुझे सब मालूम है जब तुम लोग फुरसत पाओ तो मेरे पास आ जाना। फ़राग़त के बाद वो दोनों उसके पास पहुंचे, वो कहने लगी मैं तुम्हारे साथ चलूँगी। उन दोनों ने उसे अपनी एक ऊँटनी पर सवार कर लिया और एक दूसरे का पीछा करने लगे, यहां तक कि जब वो एक रेत के टीले के पास पहुंचे वो कहने लगी, "मुझे कुछ ज़रूरत है" उन लोगों ने अपनी ऊँटनी बैठा दी (और वो औरत चली गयी)। इन दोनों ने थोड़ी देर उसका इन्तेज़ार किया, जब ताख़ीर हुई तो इनमें से एक उसके पीछे चला और वो भी वापस न आया।

दूसरा शख़्स कहता है कि मैं भी उसे तलाश करने निकल पड़ा तो मैंने देखा कि वो औरत उस शख़्स के पेट पर बैठी उसका जिगर चबा रही है, मैं ये मंज़र देखते ही लौट आया और अपनी सवारी पर सवार होकर अपना रास्ता तेज़ी से तय

करने लगा। तो वो औरत मेरे सामने आकर कहने लगी कि तुझे बहुत जल्दी है? तो मैंने कहा कि तून्हें ताख़ीर कर दी (इसी वजह से मैं चला आया) अब सवारी पर बैठो।

उसने देखा कि मुझे अपनी सांस पर काबू नही है तो पूछा तुझे क्या हुआ है? मैंने कहाः बेशक हमारे सामने एक ज़ालिम ओ जाबिर बादशाह है। उसने कहाः क्या मैं तुझे एक ऐसी दुआ न बताऊं की अगर तू उसे बादशाह की हलाकत के लिए पढ़ ले तो तू उसे हलाक करदे और उससे अपना हक़ हासिल करले?

मैंने कहाः (बताओ) वो कौन सी दुआ है? उसने बताया:

"اللّٰهُمَّ ربَّ السمٰوٰتِ وَمَا أظلَّتْ، وَ ربَّ الأرضِينَ وَمَا أقلَّتْ، وَ ربَّ الرِّياحِ وَمَا أذَرَّتْ، وَرَبَّ الشَّياَطِينِ وَمَا أضَلَّتْ۔ أنْتَ الْمَنَّانُ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْأرْضِ ذُوْالْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ تَأْخُذُ لِلْمَظْلُوْمِ مِنَ الظَّالِمِ حَقَّهُ فَخُذْلِي حَقِّيْ مِنْ فُلَانٍ فَإِنَّهُ ظَلَمَنِيْ۔"

तर्जमा:- "ऐ ज़मीन ओ आसमान के रब और उसके जो इसमें है, हवाओं के रब और उसके जिसे वो उड़ाए, और शयातीन के रब और उसके जिसे वो गुमराह करे, तू अहसान फरमाने वाला, ज़मीन ओ आसमान का पैदा करने वाला और इज़्ज़त व बुजुर्गी वाला है, तू ज़ालिम से मज़लूम का हक़ दिलाता है, तू फलाँ से मेरा हक़ दिला दे, क्यूंकि उसने मुझ पर जुल्म किया है"।

(वो कहते हैं कि) मैंने उस औरत से दुआ दोहराने के बारे में कहा तो वो दोहराने लगी यहाँ तक कि मैंने उसे याद कर लिया और वो दुआ उसके ख़िलाफ़ पढ़ दिया। (वो कहते है) मैंने कहा," اللهما إنها ظلمتني وأكلت أخي "---"ऐ अल्लाह इसने मेरे ऊपर जुल्म किया और मेरे भाई को खा गई", वो कहते हैं कि उसकी शर्मगाह पर आसमान से एक आग उतरी और उसे दो टुकड़ों में तक़सीम कर दिया, दोनों टुकड़े इधर-उधर हो गए। वो कहते हैं ये भूतनी है जो लोगों को खाती है, और रहा भूत तो वो जिन्नों से है, लोगों के साथ लह् व ओ लइब करता है, उन्हें बातिल चीजों में मुब्तला करता है और रियाह ख़ारिज करता है बस।

हदिस नम्बर (10): हज़रते साअद बिन अबि वक़्क़ास से रिवायत है, उन्होंने कहा: भूत देखने के वक़्त हमें अज़ान पुकारने का हुक्म दिया गया है।

हदीस नम्बर (11): हज़रत मुआ़विया बिन नोफैल अ़जली ने फ़रमाया: मैं क़ाज़ी "रे" अ़म्बसा बिन सईद के पास था और उनके पास सा़लबा बिन सोहेल आए तो

अ़म्बसा ने उनसे कहा : तुम ने सबसे ज़्यादा ताअ़ज्जुब खे़ज़ चीज़ कौन सी देखी है। उन्होंने कहा : मैं सुबह पीने के लिए पानी रखता था और सुबह को वहां कुछ नहीं पाता था, एक दिन मैं ने दोबारह पानी रखा और सूरह यासीन श़रीफ पढ़ दिया, जब सुबह हुई तो मैंने पानी को उसी हालत पर पाया और अंधा शै़तान घर के चारों तरफ घूम रहा था।

"आयतुल कुर्सी" शैतान से महफूज़ रहने का ज़रिया है :

हदीस नंबर (12) : हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रदिअल्लाहु अन्हु ने फरमाया: मैं ने हुजूर ﷺ से अर्ज़ किया (या रसूलल्लाहﷺ!) गफ़लत के आलम मैं शैतान मेरे पास आ जाता हैं। तो आपﷺ ने इरशाद फरमाया: जब तुम उसे देखो तो "अजीबी या रसूलल्लाह!" पुकारो (या रसूलुल्लाह ﷺ मेरी मदद फरमाएं) रावी कहते हैं के मैं ने शैतान को देखा और उसे पकड़ लिया उसने मुझे धोका दे दिया और कहा: मुझे छोड़ दो मैं दुबारा नहीं आऊंगा। (मैं ने छोड़ दिया) फिर मैं सरकारﷺ की बारगाह में आया तो आपﷺ ने फरमाया कै़दी कहां गया? मैंने अर्ज किया: मैंने उसे छोड़ दिया, क्योंकि उसने दुबारा न आने की क़सम खाई है। सरकारﷺ ने इरशाद फरमाया: वो झूठा है और वो झूठ के आदी होते हैं। मैं ने एक मर्तबा फिर उसे पकड़ा इस मरतबा भी उसने ना आने की क़सम खाई तो मैंने उसे छोड़ दिया और सरकारﷺ की बारगाह में आया, सरकार ने फरमाया: कै़दी कहां है ? मैने अर्ज़ किया मैंने उसे पकड़ा तो उसने दुबारा न आने की क़सम खाई इसलिए मैने छोड़ दिया। सरकार ने फरमाया: वो झूठा है अनक़रीब दुबारा आयेगा।

रावी कहते है कि वो दुबारा फिर आया और मैंने उसे पकड़ लिया वो कहने लगा मुझे आज़ाद कर दो मैं तुम्हे एक ऐसी चीज़ बताऊंगा के अगर तुम उस पर अमल करोगे तो शैतान कभी तुम्हारे पास नहीं आयेगा। तो मैं ने उसे छोड़ दिया। उसने कहा : "अयतल कुर्सी " पढ़ लिया करो। रावी कहते हैं कि मैं सरकार की बारगाह में हाज़िर हुआ तो आपﷺ ने कहा तेरा कै़दी कहाँ है, तो मैंने सारा वाक़या आपﷺ को सुनाया, तो आपﷺ ने फ़रमाया कि वो झूठे होते हैं लेकिन ये बात उसने सच कही।

आयतुल कुर्सी शैतान से महफूज़ रखती है

हदीस नंबर (13) : हज़रते अबु उसैद स'अदी रदिअल्लाहु अन्हु अपने बाग में

फल तोड़कर अपने कमरे में रख देते फिर जिन्नात कमरे में आकर उस की चोरी कर लेते और खराब कर देते तो उन्होंने नबी अकरमﷺ से शिकायत की हुज़ूरﷺ ने फरमाया वह जिन्नात है लिहाज़ा जब उनकी धमक सुनो तो कहो बिस्मिल्लाह मैं रसूले-खुदाﷺ को बताऊंगा तो ऐसा ही किया जिन्न बोला ऐ उसैद तुम मुझे तकलीफ देते हो, तुम नबीﷺ की ख़िदमत जाओ और मैं तुम से पक्का अहद लेता हूं कि अब ना तुम्हारे घर आऊंगा ना फल की चोरी करूँगा, तुम्हें एक आयत बताता हूं घर में पढ़ दोगे तो जिन्न वहां ना आएगा और बर्तन पर पढ़ोगे तो उस का ढक्कन ना खोलेगा कहा वह "आयतल कुर्सी" है फिर सुरीन ढीली करके गोज़ छोड़ने लगा। फिर उसैद हुज़ूरﷺ की खिदमत में हाज़िर हुए और वाक़्या बताया और कहा कि जब भागा तो गोज़ छोड़ रहा था हुज़ूरﷺ ने फरमाया तुम सच कह रहे हो और वह झूठा है।

सूरह बक़रह की आखरी आयतें पढ़ने से शैतान घर में दाखिल नही होता है।

हदीस नंबर(14): हज़रते अबुल असवद दौली फरमाते है के मेने हज़रते म'आज़ बिन जबल रदिअल्लाहू अन्हु से कहा: मुझे वो वाक़्या सुनाएं जिस में आपने शैतान को पकड़ा था, तो उन्होंने कहा: मुझे नबी पाकﷺ ने मुसलमानों के सदक़ात की हिफाज़त पर मामूर किया, मैंने तमाम खजूर एक कमरे में रख दिया और मुझे उसमे कुछ कमी नज़र आई मैंने उसके बारे में सरकारﷺ को बताया, तो आपने इरशाद फरमाया: शैतान चुराता है। (हज़रते म'आज़ रादिअल्लाहु अन्हु कहते है) मैं कमरे में दाखिल हुआ और दरवाज़ा बंद कर दिया, अचानक एक शख्त तारीक साया आया और दरवाज़े को ढांप लिया, फिर लगातार वो सूरत बदलता रहा और दरवाजा के शिगाफ से घर के अंदर आ गया, मैं उसे पकड़ ने के लिए मुकम्मल तैयार था, जब वो खजूर खाने लगा तो मैंने उस पर छलांग लगाई और उसे मजबूती से अपने हाथो की गिरफ्त में ले लिया। फिर में ने कहा: ये दुश्मने खुदा! तो शैतान ने कहा: मुझे छोड़ दो क्यूंकि में कसीरुल अयाल और फकीर हूँ और " नसीबीन" का जिन्न हूँ। हुज़ूरﷺ की बे'असत से पहले ये गांव मेरा मस्कन था, लेकिन बे'असते नबवी के बाद हमें इस गांव से निकाल दिया गया। मुझे छोड़ दो मैं हरगिज दुबारह नही आउंगा।

हजरत म'आज़ रादिअल्लाहु अन्हु कहते है मैं ने उसे छोड़ दिया। हजरत जिब्राइल ,सरकारﷺ की खिदमत में हाजिर हुए और पूरे वाक़ए से आगाह कर दिया। नबी पाकﷺ ने फजर की नमाज अदा फरमाई फिर सरकार के एक

मुनादी ने निदा दी। म'आज़ बिन जबल कहाँ है? मैं हुजूरﷺ की बारगाह में हाजिर हुआ। आपने फरमायाः चोर कहाँ है? मैंने आपको पूरा वाक़या बताया सरकारﷺ ने फरमायाः जाओ वो अन क़रीब फिर आयेगा। सरकार ने फरमान के मुताबिक वो दुबारा फिर आया। हजरत म'आज़ कहते हैः मैं गया और दरवाज़ा बंद कर दिया वो फिर दरवाजे के शिगाफ से अंदर दाखिल हुआ और खजूर खाने लगा, मैंने उसके साथ वही बरताव किया जैसा के पहली मर्तबा किया था।

उसने कहाः मैं हरगिज तुम्हारे पास नही आऊंगा, मैंने कहाः ये दुशमने खुदा तून्हें ये नही कहा था के मैं दुबारा नही आऊंगा,तो उसने कहा यक़ीनन मैं नही आऊंगा और इसकी अलामत ये है के तुम में से जब कोई शख्स सूरह बक़रह की आखरी आयतें पढ़ लेता है तो उस रात कोई जिन्न उसके घर में दाखिल नही होता है।

आयतल कुर्सी शैतान से बचने का ज़रिया

हदीस नंबर (15) : हज़रते अबू इसहाक़ ने हदीस बयान की वो कहते हैं के हजरत ज़ैद बिन साबित अपने बाग कि तरफ तशरीफ ले गए वहां आप ने एक चीख सुनी आप ने कहा ये क्या है तो एक जिन ने कहा हम कहत साली के शिकार हो गए और आप के फलों को खाना चाहते है क्या आप की इजाज़त है आप ने फरमाया जी हां। दूसरी रात फिर तशरीफ ले गए और उस बार भी शोर व गुल सुना और कहा ये क्या है एक जिन ने अर्ज किया हम कहत साली के शिकार में और आप के फ़लो को खाना चाहते है क्या आप उस की इजाज़त देते है फरमाया हां। फिर इरशाद फ़रमाया क्या तुम मुझे इस चीज़ के बारे में बताओगे जिससे मैं तुमसे मेहफूज़ रहा उसने कहा वो आयतुल कुर्सी है यानी आयतल कुर्सी शैतान से बचने का ज़रिया है।

आयतुल कुर्सी मरीज़ो के लिए दवा हैः-

हदीस नंबर (16) : हजरत वलीद बिन मुस्लिम से रिवायत है कि एक शख्स किसी दरख़्त या खजूर के दरख्त के पास आया और वहां उसने एक आवाज़ सुनी तो बात करना चाहा लेकिन कोई जवाब ना मिला तो उसने आयतुल कुर्सी शरीफ पढ़ा तो वह उसके पास उतर आया यानी दरख्त पर मौजूद सख्स नीचे आ गया उसने नीचे उतरने वाले शख्स से कहा हमारा एक आदमी बीमार है हम किस के ज़रिए उसकी दवा करें उसने कहा जिसके ज़रिए तूने मुझे नीचे उतारा है यानी आयतल कुर्सी।

हदीस नंबर (17) : हज़रते अबू मुनज़ कहते हैं, हमने हज किया तो एक बड़े पहाड़ के नीचे उतरे। लोगों का ख़याल था कि यहां जिन्न रहते हैं। पानी की तरफ से एक बूढ़ा आया, मैंने कहा: ऐ अबू शमीर! इस पहाड़ के बारे में क्या कहते हो?

क्या यहा¡ कुछ देखा है? कहा: हां! एक दिन मैंने तीर कमान ली और डरते हुए पहाड़ पर चढ़ गया और वहा¡ पानी के चश्मे के पास एक लकड़ी का घर बना कर उसमें ठहरा, अचानक पहाड़ी बकरे आए, मैं उन्हें हटाता मगर वो कुछ नह डरते, फिर उस चश्मे से पानी पी कर उसके पास बैठ गए। मैंने एक को तीर मारी, उसके जिगर में लगी तो एक चीख़ किसी ने मारी, फिर पहाड़ से सब भाग निकले और अबू शमीर पर एक बछड़ा ख़ौफ़नाक अंदाज़ में पेश हुआ तो उन्होंने सफ़ेद चका-चौंद करने वाली शम'आ¡ के मानिन्द तीर चुभो दी। कहा गया इब्ने सब'अ है तो एक बोला: क्यूं क़त्ल ना कर दिया, कहा बस में ना था। पूछा क्यूं? कहा इसलिए कि जब वोह पहाड़ पर आया तो उसने त'अव्वुज़ पढ़ लिया था।

शैतान पर क़ुरआन का असर:-

हदीस नंबर (18) : हज़रत कैस बिन हज्जाज ने कहा, मेरे शैतान ने मुझसे कहा कि जब मैं तेरे अंदर दाखिल हुआ था तो जड़ की तरह था , लेकिन आज मेरी हालत गोरी की मांनिन्दहै, मैं ने कहा यह क्यों? शैतान ने कहा तूने मुझे किताबुल्लाह के ज़रिये पिघला दिया है।

मोमिन का शैतान लाग़र और कमज़ोर होता है:-

हदीस नबंर (19) : हज़रते अब्दुल्लाह रदीअल्लाहु अन्हु ने फरमाया - मोमीन का शैतान लाग़र और नातवां (कमज़ोर) होता है।

मोमिन और शैतान के बीच झगड़ा :

हदीस नम्बर (20) : हज़रत इब्ने लहीअह ने मूसा बिन वरदान से रिवायत करते हैं, उन्होंने कहा कि सरकारﷺ ने इरशाद फ़रमाया- बेशक मोमिन अपने शैतान को उसी तरह कमज़ोर कर देता है जैसे कि तुम में से कोई सफर में अपने ऊँट को कमज़ोर करता है।

कुरआन से शैतान भागता है

हदीस नंबर (21) : हज़रते अबू खालिद वाबिली से मरवी है, उन्होंने फरमाया: मैं एक वफ्द के साथ हज़रते उमर रदिअल्लाहु अन्हु के पास गया, उस वक़्त मेरी बीवी मेरे साथ थी, हम एक जगह उतरे, मेरी बीवी मेरे पीछे थी। मैंने कुछ बच्चों की चीख ओ पुकार सुनी तो बलन्द आवाज़ से कुरान पढ़ना शुरू कर दिया फिर मेंने कुछ छूटने जैसी आवाज़ सुनी (वो लडके मेरे पास आए)। मैंने उनसे उनके बारे में पूछा, तो उन्होंने जवाब दिया कि हमको शयातीन ने पकड़ लिया था और वो हमारे साथ लहव ओ लइब कर रहे थे जब आपने बलन्द आवाज़ से कुरान पाक पढ़ा तो वो लोग हमें छोड़ कर भाग गए।

अल्लाह के जिर्क से शैतान भागता है

हदीस नंबर (22) : शैतान और इंसान का दिल:हज़रते अनस बिन मालिक रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने कहा कि आक़ा करीम ﷺ ने इरशाद फरमाया: यक़ीनन शैतान अपनी नाक इंसान के दिल पर रखे हुए है, तो जब बंदा ए मोमिन अल्लाह का ज़िक्र करता है तो शैतान भाग जाता है और जब इंसान अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो जाता है तो शैतान उसके दिल मे वसवसा डालने लगता है।

कलमा 'ला इलाहा इल्लल्लाह' दिल से शैतान को भगा देता है:

हदीस नंबर (23) :

हज़रते उमरो बिन मालिक नकरी कहते हैं मैंने अबू जौज़ह को कहते सुना: क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़ा ए कुदरत में मेरी जान है, यक़ीनन शैतान दिलों से चिमटा हुआ है, शैतानी सोच वाला अल्लाह तआला के ज़िक्र की ताक़त नही रखता, क्या तुम बाज़ारों और मजलिसों में नही देखते कि शैतान तक़रीबन हर दिन उन में से किसी के पास आता है फिर वो ज़िक्रे इलाही से ग़ाफ़िल हो जाता है, शैतान को दिल से सिर्फ "ला इलाहा इल्लल्लाह" ही दूर कर सकता है। फिर इस आयते करीमा की तिलावत की:"और जब तुम कुरान में अपने अकेले रब की याद करते हो तो वो पीठ फेर कर भागते हैं, नफरत करते"

इंसान के किस हिस्से में शैतान रहता है:

हदीस नंबर (24) :

हज़रते ख़ालिद बिन मेअरान से रिवायत है, उन्होंने कहा हर इंसान की रीढ़ की हड्डी से शैतान चिमटा रहता है, अपनी गर्दन उसके कंधे से लटकाए रहता है और उसके दिल पर अपना मुंह खोले रखता है।

इबलिश उस बन्दे को ले जाता है

हदीस नंबर (25): हज़रते साबित रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है ,वो कहते है कि मुतरफ ने कहा: मैंने ग़ौर किया तो इंसान को अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल और इब्लीस के दरमियान पड़ा हुआ पाया तो अगर अल्लाह उसको बचाना चाहे तो बचा लेता है वरना उसे इब्लीस ले जाता है।

क्या ज़लज़ले शैतान की वजह से आते हैं:

हदीस नंबर (26) : हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमरो रदिअल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: बेशक इब्लीस बाँधा हुआ है, जब वो हरकत करता है(तो फसाद बरपा होता है) रुए ज़मीन पर दो या दो से ज़्यादा लोगो के दरमियान जो भी फसाद होता है ये उसी की हरकत के सबब होता है।

बड़े शैतान का मक्रो फरेब:

हदीस नंबर (27) : हज़रते आइशा सिद्दीक़ा रदिअल्लाहु अन्हा फरमाती है कि हुजूरे अकरम ﷺ ने इरशाद फरमाया: शैतान तुम्हारे पास आता है और कहता है: तुम को किस ने पैदा किया? तो बंदा कहता है कि अल्लाह तआला ने, फिर शैतान कहता है: अल्लाह को किस ने पैदा किया? तो जब तुम में से कोई उसे पाए तो ये कहे:"आमन्तु बिल्लाहि व रसूलिही" (मैं अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाया) कि उसके सबब वो भाग जाता है।

वलहान वज़ू का शैतान है :

हदीस नंबर (28) : इब्ने अबिद्दुनिया ने अपनी उस सनद से रिवायत किया है जो हसन तक पहुंची है, उन्होंने कहा वज़ू के शैतान को वलहान कहा जाता है, वो लोगों को वज़ू में हँसाता है। हज़रते ताऊस फ़रमाते हैंः वो शैतानों में सब से ज़्यादा सख़्त शैतान है।

आलिम शैतान पर आबिद से ज़्यादा भारी है :

हदीस नंबर (29) :

हज़रते अली बिन आसिम एक बसरी मुहद्दिस से रिवायत करते हैं कि उन्होंने फरमायाः एक आलिम और एक आबिद के दरमियान राहे सुलूक में इस्लामी भाई चारगी थी। शयातीन ने इब्लीस से कहाः हम इन दोनों के दरमियान तफरीक़ की इस्तेताअत नहीं रखते तो इब्लीस ने कहाः मैं इन दोनों के लिए काफी हूं। तो वो आबिद के रास्ते में बैठ गया, यहाँ तक कि जब आबिद आया और इब्लीस के क़रीब पहुँचा तो इब्लीस उसके सामने एक ऐसे बुजुर्ग की सूरत में ज़ाहिर हुआ जिस की पेशानी पर सजदों का निशान था और आबिद से कहने लगा मेरे दिल मे एक सवाल पैदा हुआ है मैं आप से पूछना चाहता हूँ।

आबिद ने उससे कहा पूछो, अगर उनके बारे में मुझे मालूम होगा तो बताऊंगा। इब्लीस ने उससे कहाः क्या अल्लाह तआला किसी अंडे में बगैर किसी कमी व बेशी के ज़मीनो आसमान, पहाड़, दरख़्त और पानी जमा कर सकता है? तो आबिद मुताज्जिब होकर कहने लगा, बग़ैर कमी बेशी के और आबिद ने तवक़्क़ुफ़ किया। फिर इब्लीस ने कहा जाओ। और फिर शैतान अपने साथियों के पास जाकर कहने लगा कि मैंने तो आबिद को हलाक कर दिया, क्योंकि उसे अल्लाह के मामले में शक करने वाला बना दिया।

फिर इब्लीस आलिम के रास्ते मे बैठा तो जब आलिम को आता हुआ देखा तो उसके सामने खड़ा होकर कहने लगाः मेरे दिल में एक सवाल आया है, मैं आपसे उसका जवाब पूछना चाहता हूँ, तो आलिम ने कहा पूछो, अगर जवाब मालूम होगा तो बताऊंगा। इब्लीस ने कहाः क्या अल्लाह तआला किसी अंडे में बगैर किसी कमी व बेशी के ज़मीनो आसमान, पहाड़, दरख़्त और पानी जमा कर सकता है? आलिम ने जवाब दिया हाँ। फिर इब्लीस ने एक इनकार करने वाले शख़्स की तरह अपने सवाल को दोहराया कि बग़ैर कमी व ज़्यादती किये हुए?

आलिम ने डांटते हुए कहा हाँ, और इस आयते करीमा की तिलावत की:

"उसका काम तो यही है कि जब किसी चीज़ को चाहे तो उस से फरमाए हो जा वो फौरन हो जाती है"

फिर इबलीस ने अपने साथियों से कहा: आलिम के पास से तुम भी इसी तरह वापस आ जाते।

मोमिन शैतान को रूला देता है

हदीस नम्बर (30) : जब शैतान किसी बंदा ए मोमिन को फ़ितने में मुब्तला नही कर पाता है तो बहुत रोता है: हज़रते सफवान अपने एक शैख़ से रिवायत करते हैं, उन्होंने फरमाया: जब कोई मोमिन दुनिया मे शैतान के फ़ितने में मुब्तला हुए बग़ैर मर जाता है तो शैतान इस पर खूब रोता है।

इब्लीस जिन्न का बाप है:-

हदीस नम्बर (31) : हज़रत इब्ने शिहाब बयान करते हैं कि इबलीस जिन्नों का बाप है जैसे आदम अलैहिस्सलाम इंसान हैं और तमाम इंसानो के बाप हैं, उसी तरह इब्लीस जिन्न है और तमाम जिन्नों का बाप है।

इब्लीस के रोने की आवाज़ (अल्लाह पाक उस पर लानत फरमाए)

हदीस नम्बर (32) : हज़रत सईद बिन जुबैर ने कहा : जब अल्लाह पाक ने इब्लीस पर लानत फ़रमाई तो उसकी सूरत मलाएका की सूरत से बदल गयी , फिर वह गिरया व ज़ारी करते हुऐ खूब रोया। (बयान किया जाता है कि) क़यामत तक हर रोने की आवाज उसी से है।

हज़रत सईद ने फरमाया : जब शैतान ने हुजूरﷺ को मक्का में नमाज़ पढ़ते हुये देखा तो दोबारा आहो फुगां किया।

हजरत शहीद फरमाते हैं जब नबी अकरमﷺ ने मक्का को फ़ता किया तो फिर से इब्लीस ने खूब जज़'अ व फज़'अ किया , उस वक़्त उस की जुर्रियत उसके पास जमा हो गई , तो उस ने कहा तुम उम्मते मुहम्मद से शिर्क में मुब्तेला होने की उम्मीद न रखो, हाँ तुम उनको दीन के मामले में आज़माइश में डालो और उनके दरमियान शे'अर गोई और नौहा ख़्वानी आ़म करो।

शैतान का खर्राटा

हदीस नम्बर (33) : हज़रते उमरो बिन दीनार ने कहा: मैने अपने शैख़ से सुना , की इब्ने अब्बास रदीअल्लाहु अन्हु ने उन से फ़रमाया जब अल्लाह पाक ने इब्लीस मलऊन को पैदा फ़रमाया तो वह ख़र्राटे लेने लगा।

इब्लीस और उसका कुंबह (रिशतेदार)

हदीस नंबर (34) : हज़रते मुजाहिद फरमाते हैं: इब्लीस के पांच बेटे हैं और उसने उनमे से हर एक को किसी न किसी काम पर लगा दिया है रावी ने उन में से हर एक का नाम शुमार किया है , फिर उनमें से हर एक का काम बयान किया:

1. सबर- यह मुसिबतों वाला है की यह हलाक़ होने, गिरेबान चाक करने, रुख़सारो को पीटने, और डीगे मारने का हुक्म देता है।

2. अऊ़द - वह ज़िना वाला है कि वह खुद ज़िना करता है और ज़िना को आरास्ता पैरास्ता करके दुसरो को ज़िना पर आमादा करता है।

3. मसूत़ - वह झूठा है, झूठी खबर दूसरों को बताता है तो वह दूसरा शख्स अपनी क़ौम से जाकर कहता है कि मैंने एक आदमी को देखा उसका चेहरा मैं पहचानता हूं लेकिन उसका नाम नही जानता वह मुझसे ऐसा ऐसा बयान करता था (इस तरह झूठ आम हो जाता है)। और 4. दासिम तो उसका काम यह है कि वह आदमी के साथ उसके घर जाता है और घर वालों के ऐब बता कर उसको उन पर ग़ज़ब नाक करता है यानी गुस्सा दिलाता है।

5. ज़लनबूर - वह बाज़ारी है और अपना झंडा बाजा़र में नसब किए हुए है जहां पर लोगों को गुमराह करता है।

'कौन सा फरेब और धोखा इब्लीस को ज्यादा महबूब(पसंद) है- '

हदीस नंबर (35) : हजरत अबू मूसा रदीअल्लाहु त'आला अन्हु से रिवायत है, उन्होंने कहा सुबह सवेरे इब्लीस अपने लशकर को ज़मीन पर फैला देता है और कहता है कि जिसने किसी मुसलमान को गुमराह किया मैं उसकी ताजपोशी करूंगा। उनमें से एक कहता है मैं फलां के पीछे लगा रहा यहां तक कि उसने अपनी बीवी को तलाक दे दी तो इब्लीस कहता है हो सकता है वह दोबारा शादी

करें फिर 'दूसरा' कहता है मैं फला के पीछे लगा रहा यहां तक कि वह नाफरमान हो गया इब्लीस ने कहा हो सकता है कि वह तौबा करके नेक हो जाए, 'तीसरे' ने कहा मैं फलां के पीछे लगा रहा यहां तक कि उसने ज़िना कर लिया उस बात पर शैतान ने उसे शाबाशी दी और कहा तुमने काम किया है फिर 'एक शैतान' ने कहा मैं फलां के पीछे लगा रहा यहां तक कि उसने शराब पी उसको भी शैतान ने सराहा और कहा यह काम है आखिर में 'उनमें से एक' ने कहा मैं फलां के पीछे लगा रहा यहां तक कि उसने क़त्ल कर दिया तो इब्लीस ने उसे खूब सराहा और कहा यह काम बहुत बड़ा है।

औरत इब्लीस का ऐसा तीर है जो कभी खता नहीं करता :

हदीस नंबर (36) : हजरत हसन बिन सालेह ने फरमाया मैंने सुना है कि एक शैतान ने एक औरत से कहा तू मेरा आधा लश्कर है और तू मेरा ऐसा तीर है जिससे मैं वार करता हूं तो कभी खता नही करता और तू मेरी राज़दां है और मेरी ज़रूरत के वक्त तू मेरा पैगाम पहुंचाती है।

इंतेहाई ग़ुस्सा शैतान का फंदा है :-

हदीस नम्बर (37):- हज़रते वहब फ़रमाते हैं, एक राहिब ने शैतान से कहा कि इंसान की कौन सी आदत तुझे उस पर आसानी से मुसल्लत कर देती है? शैतान ने कहा: सख़्त गुस्सा। बेशक जब कोई बंदा जल्दी गुस्से में आ जाता है तो हम उसको ऐसे उलटते पलटते हैं जैसे कोई बच्चा गेंद उलटता पलटता है।

'दुनिया शैतान का जाल है'

हदीस नंबर (38) : हजरत साबित रदीअल्लाहु त'आला अन्हु ने फरमाया : जब नबीए पाक मबऊस (पैदा) हुए तो इब्लीस मलऊन ने अपने शैतानों को सहाबा के पास भेजना शुरू किया लेकिन वो इब्लीस के पास सादा कागज़ लेकर वापस आए उसने कहा क्या बात है तुम उन से कुछ फायदा ना हासिल कर सके उन्होंने कहा उनके जैसे अफराद के साथ कभी भी हमारा सामना ना हुआ इब्लीस ने कहा उनके पास ठहरे रहो हो सकता है कि दुनिया उन पर ज़ाहिर हो जाए, उस वक्त अपना काम पूरा कर सकोगे

शैतान इन्सान के रगो में खून की तरह दोड़ता है

हदीस नंबर (39) : हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदीअल्लाहु त'आला अन्हु ने फरमाया हम शैतान से कैसे बच सकते हैं हालांकि वह हमारी रगों में खून की तरह दौड़ता है।

इन्सान का तालुक शैतान और फरिस्तों दोनों से

हदीस नंबर (40) : हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रदीअल्लाहु त'आला अन्हु से मरवी है मरफूअन रिवायत है, उन्होंने फरमाया बेशक इंसान का शैतान से ताल्लुक़ है और फरिश्तों से भी ताल्लुक़ है, शैतान की कुरबत इंसान को बुराई करने और हक़ को भुलाने पर अमादा करती है और फरिश्तों से ताल्लुक अच्छाई करने और हक़ की तस्दीक़ पर आमादा करता है, जो शख्स उस दूसरी सिफत को पाए तो समझ ले कि ये अल्लाह त'आला की जानिब से है तो अल्लाह की हम्द बजा लाए और जो शख्स पहली वाली सिफ़त महसूस करे तो वो अल्लाह की पनाह तलब करे फिर आपने इस आयत की तिलावत की:

الشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ بِالْفَحْشَاءِ

तर्जमा - "शैतान तुम्हें अन्देशा दिलाता है मोहताजी का और हुक्म देता है बेहयाई का"।

शैतान अम्बिया को औरत के ज़रिये हलाक करने से मायूस न हुआ

हदीस नंबर (41): हज़रत सईद बिन अल मुसय्यब रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह पाक ने जितने भी अम्बिया पैदा फ़रमाए ,इब्लीस उनको औरत के ज़रिये हलाक करने से मायूस न हुआ।

(याद रहे अम्बिया अलैहिमुस्सलाम मासूम होते हैं हर छोटे बड़े गुनाह से बल्कि गुनाह के तसव्वुर से भी पाक होते हैं लिहाज़ा शैतान हरगिज़ उनसे गुनाह नहीं करा सकता, उन मुक़द्दस बारगाहों में शैतान को कोई मजाल नहीं। और येह कि शैतान औरत के ज़रिए उनको हलाक करने से मायूस न हुआ, इसका यही माना है कि मरदूद ने उन हज़रात को भी औरत के ज़रिये फ़रेब देने की पूरी कोशिश की और औरत के ज़रिए उनको तकलीफ पहुंचाई)

यानी औरत शैतान का सबसे खतरनाक हथियार है हम उम्मतियो को इस

हथियार से बचना चाहिए 'अज़ मुतरजिम'

इब्लीस का अपने रब से गुफ़्तगू करना:-

हदीस नंबर (42) : हज़रते अबू उमामा रदीअल्लाहु अन्हु हुज़ूर से रिवायत करते है कि आप ने इरशाद फ़रमाया : जब इब्लीस ज़मीन पर उतरा तो उसने कहा ए मेरे रब! तूने मुझे जमीन पर उतार दिया और मुझे मरदूदे बारगाह करार दिया, तू मेरे लिए कोई घर मुक़र्रर फरमा दे। अल्लाह ने फरमाया तेरा घर पख़ानागाह (शौचालय) है उसने अर्ज़ किया मेरे लिए बैठने की जगह मुक़र्रर फरमा दे,अल्लाह ने फरमाया : तेरे बैठने की जगह बाज़ार और रास्ते हैं। फिर उसने अर्ज़ किया मेरे लिए खाने का सामान मुक़र्रर फरमा दे अल्लाह ने फरमाया : हर वह खाने की चीज़ जिस पर अल्लाह का नाम ना लिया गया हो वह तेरे खाने का समान है।

इब्लिस ने फिर अर्ज़ किया या अल्लाह! मेरे लिए पीने की कोई चीज मुक़र्रर कर दे, अल्लाह ने फरमाया हर नशा आवर चीज़ तेरे पीने का सामान है।

इब्लीस ने फिर अर्ज़ किया मेरे लिए कोई मुअज़्ज़िन (अपने तरफ बुलाने वाला) मुक़र्रर कर दे, अल्लाह ने फरमाया बांसुरी,गाना, ढोलक,मौसिक़ी और बजाने की चीज़।

फिर इब्लीस ने अर्ज़ किया मेरे लिए किताब मुक़र्रर कर दे तो अल्लाह ने फरमाया गुदाई(यानी गुदाई के ज़रिए जो लिखा जाए वो तेरे लिए किताब है)।

फिर शैतान इब्लीस ने अर्ज़ किया मेरे लिए कोई बात मुक़र्रर कर दे तो अल्लाह ने फरमाया : झूठ। फिर अर्ज़ किया मेरे लिए रसूल (पैगाम पहुंचाने वाला) मुक़र्रर कर दे, तो अल्लाह ने फरमाया काहिन (जादूगर)। फिर इब्लीस ने अर्ज़ किया मेरे लिए कोई जाल पैदा कर दे, अल्लाह ने फरमाया औरत तेरा जाल है(यानी शैतान औरत के ज़रिए आसानी से किसी को गुमराह कर सकता है)।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती में शैतान का मक्र ओ फरेब:

हदीस नंबर (43): हज़रत सलीम बिन अब्दुल्लाह अपने वालिद से रिवायत करते करते है, उन्होंने कहा : जब हज़रत नूह अलैहिस्सलाम कश्ती पर सवार हुवे तो

उसमें एक बूढ़े को देखा जिसे पहचानते न थे, फ़रमाया तू किस लिए दाखिल हुआ है? बूढ़े (इब्लीस) ने कहा मैं तुम्हारे यारों के दिलों पर क़ाबू पाने को आया हूँ ताकि उनके दिल मेरे साथ हों और जिस्म तुम्हारे साथ हज़रत नूह अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया ऐ दुश्मने खुदा ! निकल जा यहाँ से शैतान ने कहा, जनाब पाँच चीजें हैं, जिस से मैं लोगों को हलाक करता हूँ उन में से तीन तुम से न कहूँगा और दो तुम्हें बताऊँगा हज़रत नूह को वही हुई कि उस से कहो तीन की मुझे हाजत नही, वह दो बयान कर, शैतान ने कहा, उन्ही दो से मैं आदमियों को हलाक करता हूँ

1. हसद कि उसी की वजह से मैं मलऊन हुआ और शैतान मरदूद कहलाया,

2. हिर्स (लालच) कि आदम के लिए तमाम जन्नत मुबाह करदी गई, मगर मैंने हिर्स दिलाकर उन से अपना काम निकाल लिया।

रावी कहते है : इब्लीस ने मूसा अलैहिस्सलाम से मुलाकात की और कहा ऐ मूसा ! अल्लाह तआला ने तुम्हें अपनी रिसालत के लिए चुना और कलीम बनाया है, मैं भी अल्लाह की मख्लूक़ में शामिल हूँ और मुझ से एक गुनाह सरज़द हो गया है, अब मैं तौबा करना चाहता हूँ , आप खुदा से मेरी सिफारिश कीजिए ताकि वह मेरी तौबा क़बूल करले और मुझे मुआफ़ करदे, हजरत मूसा अलैहिस्सलाम ने खुदा से अर्ज़ की और सिफारिश की कि शैतान अब मुआफी चाहता है, उसे मुआफ़ी दे दी जाए खुदा तआला ने फ़रमाया, मूसा ! मेरी नाराज़गी उससे आदम की वजह है, उसने आदम को सज्दा न किया तो मैं उससे नाराज़ हो गया, अब अगर वह मुआफी चाहता है तो आदम अलैहिस्सलाम की कब्र पर जाए और आदम की क़ब्र को सज्दा करे तो मैं राजी हो जाऊँगा हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम शैतान से मिले और फ़रमाया कि खुदा तआला ने मुआफ़ी के लिए यह फरमाया है कि तुम आदम अलैहिस्सलाम की कब्र पर जाओ, और उन की कब्र को सज्दा कर लो तो मैं राज़ी हो जाउँगा, और तुम्हारी तौबा क़बूल कर लूँगा, शैतान ने कहा रहने दीजिए जनाब मैंने जब आदम को जन्नत में जिन्दा में सज्दा नही किया तो मरने के बाद कहा से सज्दा करूँगा (यानी अकड़ गया)।

इब्लीस ने कहा : ऐ मूसा आपने अल्लाह की बारगाह में मेरी सिफारिश की मैं उस वजह से आपका मुझ पर कोई हक़ है उसने कहा तीन मकान पर मुझे याद कर लेना और हलाकत उन्ही तीनों में है:-

1. जब तू गुस्सा हो तो मुझको याद कर लेना क्योंकि उस वक्त मेरी बात तेरे दिल में होती है मेरी नजर तेरी आंखों में होती है और मैं तेरी रगों में खून की तरह

दौड़ता हूं (यानी जब भी गुस्सा आए तो समझ लो कि इब्लीस की बुनियाद पर है)।

2. जिहाद के दिन मुझे याद करना क्योंकि जब कोई जंगे जेहाद के लिए जाता है तो मैं उसे घर वालों की याद दिलाता हूं यहां तक की वह लौट आता है।

3. गैर महरम औरत के साथ बैठने से बचो क्योंकि मैं उसका पैगाम तेरे पास लाता हूं और तेरा पैगाम उसके पास ले जाता हूं।

(ये तीनों इब्लीस के फंदे हैं इस लिए इन हालात में खुदपर क़ाबू रखना ज़रूरी है)

इब्लीस तौबा नहीं किया मौका मिलने के बावजूद

हदीस नंबर (44) : हज़रते अबुल आलिया से रिवायत है उन्होंने कहाः जब हज़रते नूह अलैहिस्सलाम की कश्ती लंगर अंदाज हूई तो आप ने जहाज़ के पिछले हिस्से में इब्लीस को देखा। हज़रते नूह अलैहिस्सलाम ने फ़रमायाः तेरे लिए तबाही हो, तेरी वजह से जमीन वाले गर्क़ हुए और तूने उन्हें हलाक कर दिया, इब्लीस ने कहा अब मैं क्या करूँ? आपने फ़रमाया तौबा कर, उसने कहा अपने रब से पूछिए क्या मेरी तौबा कुबूल होगी?हज़रते नूह अलैहिस्सलाम ने अपने रब से दुआ की, वह्यी आई ऐ नूह! इब्लीस की तौबा यह है कि वो आदम की क़ब्र का सज्दा कर ले, फिर आपने इब्लीस से कहा तेरे लिए तौबा का तरीका मुक़र्रर किया गया है, इब्लीस ने कहा वह क्या है? फ़रमाया तू आदम अलैहिस्सलाम की क़ब्र को सज्दा कर ले, इब्लीस ने कहा जब आदम हयात थे तो उनका सज्दा नही किया तो क्या मरने के बाद सज्दा करूँगा।

जलन और लालच से बचो

हदीस नंबर (45) : हज़रते लैस से रिवायत है उन्होंने कहा हज़रते नूह अलैहिस्सलाम से इब्लीस ने मुलाक़ात की और कहा : ऐ नूह हसद (जलन) और हिर्स (लालच) से बचो क्योंकि मैंने हसद किया तो ज़न्नत से निकाल दिया गया, और आदम ने शजरहे ममनूआह (जिस दरख़्त का फल खाने से उन्हें रोका गया था) पर लालच किया तो जन्नत से निकाल दिए गए।

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम के साथ शैतान का मकर ओ फरेब

हदीस नंबर (46) : हज़रते अब्दुर्रहमान बिन ज़्याद बिन अन’अम फ़रमाते हैं -

हजरत मूसा अलैहिस्सलाम एक मजलिस में तशरीफ़ फरमा थे उसी दरमियान इब्लीस आया उसकी हालत यह थी कि उसके सर पर एक रंग बिरंगी लंबी टोपी थी जब वह हज़रते मूसा के करीब पहुंचा तो टोपी उतार कर रख दिया फिर उनके पास आकर सलाम किया अस्सलाम अलैकुम या मूसा " ऐ मूसा! तुम पर सलामती हो" आपने कहा तू कौन है उसने जवाब दिया इब्लीस। आपने फरमाया अल्लाह तुझे ज़िन्दा ना रखें किस लिए आया है। उसने कहा मैं आपको सलाम करने आया हूँ उस क़द्र ओ मन्ज़िलत की बुनियाद पर जो अल्लाह के नज़दीक आपको हासिल है। आपने फरमाया जो चीज़ तुम्हारे सर पर थी क्या है, कहने लगा उसके जरिए मैं इंसान के दिल को ले भागता ह। आपने फरमाया वह कौन सी चीज है कि बंदा जब उसे कर ले तो तू उस पर ग़ालिब आ जाता है। इब्लीस ने कहा जब कोई खुद पसंदी में मुबतला हो जाए, अपने अमल को ज्यादा समझने लगे और अपने गुनाहों को भूल जाएं तो मैं उस पर ग़ालिब आ जाता हूं मज़ीद यह भी कहा मैं आपको तीन चीजों से मना करता हूं-

1. ऐसी औरत के साथ तनहाई में ना हो जो आपके लिए हलाल न हो क्योंकि जब कोई शख्स किसी गैर महरम औरत के साथ बैठता है तो मैं खुद उसके साथ होता हूं ताकि मैं उसे औरत के फितना में मुबतला कर दूँ।

2. जब भी आप अल्लाह त'आला से कोई बात अहद करें तो उसे ज़रूर पूरा करें क्योंकि जब कोई बंदा अल्लाह से अहद करता है तो मैं उसके साथ रहता हूं यहां तक कि उस शख्स को अहद (वादा) पूरा नही करने देता।

3. जब तुम सदक़ा निकालना चाहो तो फौरन निकाल दो क्योंकि जब कोई सदक़ा निकालना चाहता है तो मैं खुद उसके साथ रहता हूं यहां तक कि उसे अदा करने से रोक देता हूं।

फिर इब्लीस यह करते हुए भाग गया हाय अफसोस मूसा उन तीन चीज़ों के बारे में जान गया जिससे इंसान को बचना चाहिए।

इब्लीस क्या चाहता है

हदीस नंबर(47) : हजरत फुज़ैल बिन अयाज़ से रिवायत है,उन्होंने कहा: हम से हमारे बाज शुयूख़ ने हदीस बयान की: हजरत मूसा अलैहिस्सलाम अपने रब से मुनाजात कर रहे थे। इसी दौरान इब्लीस आ गया, उसी वक्त एक फरिस्ता आ

कर कहने लगा: ये इब्लीस! इस हालत में तू इनसे किया चाहता है, उसने कहा: इनसे वही चाहता हूँ जो इनके बाप आदम अलैहिस्सलाम से चाहा था जबकि वो जन्नत में थे।

'हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के साथ शैतान का मकरो फरेब:'

हदीस नंबर (48) : हज़रते तलहा बिन मसरफ का बयान है: इब्लीस ने कहा कि मैंने कभी अय्यूब की जानिब से कोई ऐसी चीज़ न पाई जिससे मैं खुश हो जाऊं, मगर ये कि जब वो (अपनी तकलीफ की वजह से) कराहते हैं तो मैं समझता हूँ कि मैंने उनको तकलीफ पहुंचा दी।

वो शैतान है

हदीस नंबर (49) : हज़रते वहब बिन मम्बह ने फरमाया: इब्लीस ने हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम की बीवी से कहा तुम लोगों को किस सबब से तकलीफ पहुंची है, उन्होंने कहा:अल्लाह के मुक़द्दर करने से, इब्लीस ने कहा:तुम मेरे साथ चलो,वो चल पड़े, इब्लीस ने एक वादी में उनकी तमाम ज़ाइल ने'मतों को दिखाया और कहा: अगर तुम मेरा सजदा करोगी तो ये तमाम चीज़ें तुम को लौटा दूंगा,आप ने कहा: मैं अपने शौहर से इजाज़त ले लूँ। फिर आपने हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम को उसकी इत्तिला दी, आप ने फरमाया: अब तू जान ले के वो शैतान है, अगर तूने उसका मुतालबह पूरा किया तो जरुर मैं तुझे सौ कोड़े मारूंगा।

हज़रते ज़ुलकिफ्ल अलैहिस्सलाम के साथ शैतान का मकर ओ फरेब

हदीस नंबर (50) : हज़रते ज़ुलकिफ्ल अलैहिस्सलाम के बारे में अब्दुल्लाह बिन हारिस से रिवायत है उन्होंने कहा: एक नबी ने अपने क़ौम से फरमाया तुम में कोई ऐसा है जो इस बात की ज़िम्मेदारी ले कि वह ग़ज़बनाक ना हो और मेरे साथ मेरे दर्जे में हो और मेरे बाद वो मेरा नायब हो। एक नौजवान ने कहा मैं उन चीज़ों की ज़मानत लेता हूं। उस नबी ने मज़कूरा कालिमात उस नौजवान के सामने दोहराए। नौजवान ने कहा मैं जिम्मेदारी क़बूल करता हूं। जब वोह नबी विसाल फ़रमा गए तो वह नौजवान उनका क़ाइम मक़ाम हुआ। एक दिन इब्लीस उनके पास उन्हें गजबनाक करने आया उन्होंने एक शख्स से फरमाया उसके साथ जा,वोह गया और वापस आकर बताया कि उसने कुछ नही देखा दोबारा

फिर इब्लीस आया तो उन्होंने उसके साथ दूसरे को भेजा उसने वापस आकर इत्तिला दी कि मैं कुछ नही देखा जब तीसरे मर्तबा इब्लीस आया तो उन्होंने उसका हाथ पकड़ लिया वह निकल भागा।

उनका नाम जुलकिफ्ल इस वजह से पड़ा कि उन्होंने यह ज़िम्मेदारी क़बूल की थी के गुस्सा ना करेंगे।

हज़रते यहया बिन ज़करिया अलैहिमुस्सलाम के साथ शैतान का मक्रो फरेब:

हदीस नम्बर (51) : हज़रते वहीब बिन विर्द से रिवायत है, उन्होंने कहा: हमें खबर पहुँची है कि ख़बीस इब्लीस, हज़रते यहया बिन ज़करिया अलैहिमुस्सलाम के पास आया और कहने लगा: मैं आपको नसीहत करना चाहता हूँ, आपने फ़रमाया: तू झूठा है तू मुझे नसीहत न कर अलबत्ता औलादे आदम के मुताल्लिक़ बता, उसने कहा: मेरे नज़दीक वो तीन तरह के होते हैं:

(1). उनकी पहली किस्म हम पर बहुत सख़्त है, हम इस किस्म के लोगों के पास जाते हैं यहाँ तक कि उन्हें फ़ितने में मुब्तला करके मुत्मइन हो जाते हैं लेकिन वो तौबा व इस्तग़फ़ार करके हमारा किया धरा अकारत कर देते हैं, हम दोबारा उनके पास जाते हैं, हम उनसे ना उम्मीद नही होते लेकिन हम अपने मकसद में कामयाब भी नही होते, गोया हम उनकी जानिब से सख़्त मशक़्क़त में मुब्तला रहते हैं।

(2). दूसरी किस्म उन लोगों की है जो हमारे क़ब्ज़े में उसी तरह होते हैं जैसे तुम्हारे बच्चों के हाथ मे गेंद, हम जहां चाहते हैं उनको फेर देते हैं।

(3). और आख़री किस्म तो आप ही कि तरह मासूम हैं, हम उनकी जानिब से किसी चीज़ पर क़ादिर नहीं।

हज़रते यहया ने फरमाया: क्या तुन्हे मुझ पर कभी क़ाबू पाया है, वो कहने लगा नहीं मगर एक मर्तबा आप खाना खाने जा रहे थे, मैने आप के लिए उस खाने की लज़्ज़त को बढ़ा दिया हत्ता कि आपने अपनी मुक़र्ररह मिक़दार से ज़्यादा खा लिया। और उस रात आप सो गए और जिस तरह नमाज़ अदा करते थे उस तरह न कर सके, आप ने फरमाया यक़ीनन मैं कभी पेट भर कर खाना नही खाऊंगा, इब्लीस ने कहा यक़ीनन मैं आपके बाद किसी नबी को नसीहत नही करूंगा।

बखील मुसलमान शैतान का महबूब है

हदीस नम्बर (52) : हज़रते अब्दुल्लाह बिन खबीक़ से मरवी उन्होंने कहा: हज़रते यहया बिन ज़करिया अलैहिमुस्सलाम ने इब्लीस से मुलाक़ात की और फ़रमाया ऐ इब्लीस! मुझे बता कि तेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब कौन लोग हैं, और सबसे ज़्यादा नापंसदीदा कौन हैं, उस ने कहा: मेरे नज़दीक सबसे ज़्यादा महबूब बखील मुसलमान है, और सबसे ज़्यादा नापंसदीदा फ़ासिक़ सखी है, आप ने फ़रमाया वो कैसे?, उसने कहा बखील कि बुख्ल मुझे काफी है और फ़ासिक़ सखी पर मुझे अंदेशा है कि अल्लाह तआला उसे उसकी सख़ावत की बुनियाद पर माफ करदे और उसकी सख़ावत को क़बूल करे।

फिर इब्लीस ये कहते हुए भाग गया कि अगर आप यहया न होते तो मैं आप को कुछ नही बताता।

हज़रते ईसा बिन मरियम अलैहिमुस्सलाम के साथ शैतान का मक्रो फरेब:

हदीस नम्बर(53) : हज़रते ईसा बिन मरयम से इब्लीस ने मुलाक़ात की और कहा: आप रबूबियत के अज़ीम मनसब पर फ़ाइज़ हुए, मां की गोद मे आप ने कलाम किया, हालांकि आप से पहले इस तरह किसी ने कलाम न किया।

हज़रते ईसा ने फरमाया: बल्कि रबूबियत और अज़मत उस अल्लाह के लिए है जिसने मुझे कुव्वते गोयाई अता फ़रमाई, फिर वो मुझे मौत देगा उसके बाद फिर मुझे ज़िन्दा फ़रमा देगा।

इब्लीस ने कहा: आप रबूबियत के अज़ीम दर्जे से सरफ़राज़ हुए क्यूंकि आप मुर्दों को जिन्दा करते है।

आप ने फरमाया: रबूबियत तो उस अल्लाह के लिए है जो मुझे और उसे जिसको मैंने जिन्दा किया मौत देगा, फिर वो मुझे जिन्दा करेगा।

इब्लीस ने कहा: 'क़सम खुदा की आप ज़मीनो आसमान के माबूद हैं', रावी का बयान है: इस क़ौल पर हज़रते जिब्रईल अलैहिस्सलाम ने अपने परों के ज़रिए उसको झटका दिया जिसकी वजह से वो सूरज की पहली किरन तक जा पहुंचा, फिर दूसरा झटका दिया तो वो कीचड़ वाले पानी मे जा पहुंचा, फिर आख़री झटका दे कर उसे सातवें समंदर में दाख़िल करके धंसा दिया यहां तक कि उसने कीचड़ का मज़ा चख लिया, फिर वहां से ये कहते हुए निकला, ऐ इब्ने

मरयम! जो तकलीफ मुझे तुम से पहुंची है वो किसी को किसी से न पहुंची होगी।

हदीस नम्बर (54): हज़रते ताऊस ने फरमाया शैतान ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात की और कहा: ऐ इब्ने मरयम! अगर आप सच्चे हैं तो उस बलन्द चोटी पर चढ़ कर खुद कुशी करके दिखाइए। हज़रते ईसा ने फरमाया: तेरे लिए तबाही हो, क्या अल्लाह तआला ने ये नहीं फ़रमाया है: "ऐ इब्ने आदम! तू मुझे अपनी हलाकत के ज़रिए न आज़मा, मैं जो चाहता हूँ करता हूँ"।

इब्लीस और ईसा अलैहिस्सलाम

हदीस नम्बर (55): हज़रते अबू उस्मान से रिवायत है उन्होंने फ़रमाया: हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम पहाड़ की चोटि पर नमाज़ पढ़ रहे थे, इतने में उनके पास इब्लीस आया और उसने कहा: आप का ख़याल है हर चीज़ क़ज़ा और क़द्र से है? आप ने फ़रमाया: हाँ, इब्लीस ने कहा: खुद को पहाड़ से नीचे गिरा दीजिये और ये कहिये की तक़दीर की बुनियाद पर हुआ। आप ने फरमाया: ऐ लईन! अल्लाह तआला अपने बंदों को आज़माता है, बंदों के लिए ये रवा नहीं कि वो अल्लाह तआला को आज़माएँ।

इब्लिस दुनियां का सरदार है

हदीस नम्बर (56): हज़रते सईद बिन अब्दुल अज़ीज़ ने बयान किया कि हज़रते ईसा बिन मरियम अलैहिमुस्सलाम ने इब्लीस की जानिब देखा और फ़रमाया: ये दुनियां का सरदार है, दुनियां की जानिब निकला और दुनियां ही मांगा, दुनियां की किसी चीज़ में मैं उसे शरीक नही करूंगा हत्ता की उस पत्थर में भी जिसे मैं अपने सर के नीचे रखता हूं और मैं जब तक दुनियां में रहूंगा कभी हंसुंगा नही।

शैतान दुनियां के साथ है

हदीस नम्बर (57): हज़रते इब्ने हब्स ने कहा: हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया: बेशक शैतान दुनियां के साथ है, माल के साथ उसका मक्र, ख़ाहिशात के वक़्त उसकी तेज़ी और शहवत के वक़्त उसकी कामयाबी है।

मुहम्मद बिन इदरीस की सनद के साथ भी ये हदीस मरवी है, अलबत्ता हदीस का

आख़री जुज़ 'शहवत के वक़्त उसकी कामयाबी है' उस रिवायत में नही है।

क़ारून के साथ शैतान का मक्रो फ़रेब:

हदीस नम्बर (58) : हज़रते अहमद बिन अबु हवारी कहते हैं, मैंने अबु सुलैमान और उन के सिवा दूसरों से सुना, उन्होंने कहा: क़ारून के सामने इब्लीस ज़ाहिर हुआ, रावी कहते हैं: क़ारून एक पहाड़ पर चालीस साल तक इबादत में मशगूल रहा यहां तक कि इबादत के मामले में वो बनु इसराइल में मुमताज़ हो गया। रावी कहते हैं: इब्लीस ने क़ारून के पास अपने चंद शयातीन को भेजा लेकिन वो उस पर कुदरत न पा सके, तो वो बज़ाते खुद क़ारून के पास आया और उसके साथ इबादत करने लगा, क़ारून कभी-कभी खाता पीता लेकिन ये कुछ न खाता पीता, और वो क़ारून की कुव्वत से ज़्यादा इबादत व रियाज़त करता, रावी कहते हैं: क़ारून इब्लीस के सामने झुक गया, तो इब्लीस ने उस से कहा: ऐ क़ारून! मैं इससे राज़ी हुआ, तू बनु इसराइल के जनाज़े और जमात में हाज़िर न हो, रावी ने कहा: फिर इब्लीस ने क़ारून को पहाड़ पर शब बेदारी से रोका, यहां तक कि उसको गिरजा घर मे दाख़िल कर दिया, रावी कहते हैं: बनु इस्राइल के लोग उनके पास खाने पीने की चीजें ले जाते, एक मर्तबा इब्लीस ने क़ारून से कहा: ऐ क़ारून! अगर हम इससे राज़ी हैं तो हम बनु इसराइल पर बोझ बन गए हैं, क़ारून ने कहा: तो फिर बेहतर क्या होगा?, उसने कहा: हम एक दिन कमाएँ और जुमा तक इबादत करें, क़ारून ने कहा: ठीक है। फिर इब्लीस ने उस से कहा: हम इससे राज़ी हो गए कि ना हम सदक़ा करेंगे और ना ही कोई काम करेंगे, तो क़ारून ने कहा: तो बेहतर क्या होगा? इब्लीस कहने लगा: हम एक दिन इबादत करें और एक दिन कमाएँ, क़ारून ने इस तरह करना शुरू किया और इब्लीस उसे छोड़कर भाग गया, और क़ारून पर दुनियां ग़ालिब आ गयी।

बंदों के साथ शैतान का मक्रो फ़रेब:

हदीस नम्बर (59) : हज़रते हसन रदिअल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने फ़रमाया: लोग अल्लाह तआला को छोड़ कर एक दरख़्त की इबादत करते थे, एक शख़्स उस के पास आकर कहने लगा: ज़रूर में इसे काट दूँगा यहां तक कि रज़ा ए इलाही की ख़ातिर उस दरख़्त को काटने आया, रास्ते में शैतान उससे

इंसानी सूरत में मिला और कहने लगा, क्या इरादा है? उसने जवाब दिया: अल्लाह तआला को छोड़कर लोग जिस दरख़्त की इबादत करते हैं मैं उसे काटना चाहता हूँ, शैतान ने कहा: जब तू उस दरख़्त की इबादत नही करता तो उसकी इबादत से तुझे क्या नुक़सान है, उसने कहा: मैं उसे ज़रूर काटूंगा, शैतान ने कहा क्या तेरे लिए ये बेहतर न होगा कि तू उसको न काटे और उसके एवज़ हर सुबह तेरे तकिये के पास तुझे दो दीनार मिलें। वोह कहने लगा, इसका ज़िम्मेदार कौन है?, शैतान ने कहा: मैं ज़िम्मेदार हूँ, वो शख़्स वापस हो गया, और जब सुबह हुई तो अपने तकिये के नीचे दो दीनार पाया, लेकिन जब दूसरी सुबह हुई तो कुछ न पाकर ग़ज़बनाक हुआ और फिर दरख़्त को काटने के इरादे से निकल पड़ा, इस मर्तबा शैतान उसके सामने अपनी असल सूरत में ज़ाहिर हुआ और कहने लगा: कहाँ जा रहे हो? उसने कहा अल्लाह तआला के सिवा जिस दरख़्त की इबादत की जाती है उसे काटने जा रहा हूं, शैतान ने कहा: तू झूटा है, तू उसको नही काट सकता। इसके बावजूद वो उसको काटने के लिए आगे बढ़ा, उसी वक़्त ज़मीन उसको लेकर धंस गई क़रीब था कि वो मर जाये, शैतान ने उससे कहा: तू जानता है मैं कौन हूँ? मैं शैतान हूँ, पहली मर्तबा तू रज़ा ए इलाही की ख़ातिर उस दरख़्त को काटने चला तो मैंने दो दीनार के ज़रिए तुझे धोखा दिया और तू काटने से रुक गया। लेकिन दूसरी मर्तबा तू दीनार के लिए आया है, इसी वजह से मैं तुझ पर क़ाबू पा गया।

एक राहिब के साथ शैतान का मक्रो फ़रेब:

हदीस नम्बर (60):

हज़रते उबैद बिन रूफ़ाआ रदिअल्लाहु अन्हु हुज़ूरे अकरम ﷺ से मरफ़ूअन रिवायत करते हैं कि आप ने इरशाद फ़रमाया: बनी इसराईल में एक राहिब था, शैतान ने एक मर्तबा एक लड़की को पकड़ कर उसका गला घोंट दिया और उसके घर वालों के दिल में ये बात डाल दी कि उसकी दवा फलाँ राहिब के पास है। घर वाले उस राहिब के पास अपनी लड़की ले कर गए लेकिन राहिब ने अव्वलन क़बूल करने से इनकार कर दिया, फिर वो लोग इसरार करने लगे हत्ता की राहिब लड़की को अपने पास रखने को राज़ी हो गया, लड़की राहिब के पास रहने लगी फिर शैतान राहिब के पास आया और राहिब को ज़िना पर उकसाया यहाँ तक कि राहिब ने उसको हामिला कर दिया, फिर शैतान उसके पास आया और कहने लगा, अब तो आप रुसवा हो जाएंगे।

लिहाज़ा बेहतर ये है कि तू इसे क़त्ल कर दे और जब इसके घर वाले आएं तो कह देना की वो अपनी फ़ितरी मौत मर गयी है, राहिब ने उस लड़की को क़त्ल करके दफ़्न कर दिया, अब शैतान उस लड़की के घर वालों के पास आया और उनके दिल में ये बात डाल दी कि राहिब ने तुम्हारी लड़की के साथ ज़िना किया और उसे क़त्ल करके दफ़्न कर दिया, शैतान की बात पर लड़की के घर वाले राहिब के पास अपनी लड़की की ख़बर लेने आए,राहिब ने जवाब दिया, वो तो मर गई, उन्होंने राहिब को गिरफ्तार कर लिया। फिर शैतान राहिब के पास आया और कहने लगा: मैंने ही उस लड़की का गला घोंटा, मैंने ही उसके घर वालों को उसे तेरे पास लाने का मशवरा दिया, और मैंने ही तुझको इस मामले में फंसाया है।

लिहाज़ा अगर तू मेरी इताअत करे तो निजात पा जाएगा, फिर उसने कहा: मेरा सज्दा करो, राहिब ने दो सजदे किये, इसके मुताल्लिक़ अल्लाह फ़रमाता है:

"शैतान की कहावत जब उसने आदमी से कहा कुफ्र कर फिर जब उसने कुफ्र कर लिया, बोला: मैं तुझ से अलग हूँ। मैं अल्लाह से डरता हूँ जो सारे जहान का रब है।"

इब्लीस और हज़रते जिबरईल अलैहिस्सलाम

हदीस नंबर (61) : हज़रते अनस रदीअल्लाहु त'आला अन्हु से रिवायत है उन्होंने कहा नबीए पाकﷺ मक्का शरीफ में सजदा रेज़ थे कि उस दरमियान इब्लीस आया और आपकी गर्दन को रौंदना चाहा, तो हज़रते जिबरईल अलैहिस्सलाम ने अपने पर के जरिए उसको ज़ोर का झटका दिया यहां तक कि वोह 'उर्दुन' में जाकर गिरा।

हज़रते उमर बिन खत्ताब रदीअल्लाहु त'आला अन्हु के साथ शैतान का मक्रो फरेब

हदीस नंबर (62) : हज़रत ज़ुबैर रदीअल्लाहु त'आला अन्हु फरमाते हैं मैंने हज़रत अब्दुल्लाह रदीअल्लाहु तआला अन्हु से सुना वह फरमाते हैं रसूलल्लाहﷺ के एक सहाबी कही तशरीफ ले जा रहे थे, रास्ते में उन्हें शैतान मिला और झगड़ने लगा यहां तक की उन दोनों ने आपस में कुश्ती शुरू कर दी बिल आखिर सहाबीए रसूलﷺ ने शैतान को चित्त कर दिया तो शैतान ने कहा मुझे छोड़ दो मैं तुमको एक अजीबो-ग़रीब बात बताऊंगा। सहाबी रसूलﷺ ने

उसको छोड़ दिया और कहा बताओ, शैतान ने कहा नही बताऊंगा।

रावी कहते हैं दोनों फिर लड़ने लगे यहां तक कि सहाबी ने दोबारा उसको चित्त कर दिया वह कहने लगा मुझे छोड़ दो मैं आपको एक अजीबो ग़रीब बात बताऊंगा उन्होंने छोड़ दिया और कहां बताओ, उसने कहा नही बताऊंगा। रावी कहते हैं तीसरी मर्तबा भी वोह दोनों लड़ पड़े यहां तक की सहाबीए रसूलﷺ उसके सीने पर सवार हो गए और उसका अंगूठा चबाने लगे। उसने कहा मुझे छोड़ दो, उन्होंने कहा जब तक तो वह अजीबो ग़रीब चीज नही बताएगा मैं तुझे नही छोडूंगा उसने कहा वोह सूरह बक़रह है, उसकी किसी भी आयत को शैतानों के बीच पढ़ दिया जाए तो वह भाग जाएंगे और जिस घर में उस की तिलावत की जाए उसमें कभी शैतान दाखिल नही होंगे।

लोगों ने पूछा ऐ अब्दुर्रहमान वह कौन से सहाबी थे? उन्होंने कहा उमर बिन खत्ताब रदीअल्लाहु त'आला अन्हु के सिवा कौन होंगे।

जिन्नात और इंसान से जंग

हदीस नंबर (63): हजरत अम्मार बिन यासिर ने फ़रमाया: मैंने हुजूर अकरमﷺ के साथ जिन्नात और इंसान से जंग किया। उनसे पूछा गया आपने जिन्नात और इंसान के साथ किस तरह जंग किया उन्होंने फरमाया एक सफर में हम हुजूरﷺ के साथ थे। एक जगह हमने क़याम (पड़ाव) किया। फिर मैंने अपना मश्कीज़ा और डोल पानी लाने के लिए लिया, रसूलﷺ ने फरमाया सुनो! पानी के पास एक शख्स आएगा और तुम्हें पानी लेने से मना करेगा। हज़रते अम्मार फरमाते हैं जब मैं कुंए के मुंडेर के पास पहुंचा तो वहां एक सियाह फाम जंगजू शख्स आया और कहने लगा, कसम खुदा की आज तुम पानी का एक क़तरा भी नही ले जा सकते। उसके बाद हम दोनों में कुश्ती होने लगी यहां तक कि मैंने उसको चित्त कर दिया और एक पत्थर के ज़रिए उसका मुंह और नाक तोड़ दी फिर अपना मश्कीज़ा भरकर हुजूरﷺ की बारगाह में आया, आपने फरमाया क्या पानी के पास कोई आया था? मैंने कहा हां या रसूल अल्लाहﷺ। आपने फरमाया क्या तुम्हें मालूम है कि वह कौन था? मैंने कहा नही, आप ने फरमाया वह शैतान था।

शैतान अल्लाह त'आला के ज़िक्र से ग़ाफिल कर देता है

हदीस नंबर (64) : हज़रत मुहम्मद बिन हूत से मरवी है (जो अशराफे मदीना में से हैं) उन्होंने सफवान बिन सलीम से रिवायत की, उन्होंने कहा मदीना वाले अब्दुल्लाह बिन हंज़ला रदीअल्लाहु अन्हु के मुता'ल्लिक़ बयान करते हैं कि जिस वक्त वोह मस्जिद से निकल रहे थे शैतान उनसे मिला और कहा ए इब्ने हंज़ला क्या तुम मुझे पहचानते हो? आप ने फरमाया हां वह कहने लगा मैं कौन हूं? उन्होंने कहा तू शैतान है, उसने कहा कैसे पहचाना? उन्होंने कहा मैं अल्लाह का ज़िक्र करते मस्जिद से निकला लेकिन तुझे देखते ही मैं अल्लाह त'आला के ज़िक्र से ग़ाफिल हो गया तो मैं समझ गया कि तू शैतान है। उसने कहा तुमने सही पहचाना मैं तुम्हें कुछ बातें बताना चाहता हूं उसे याद रखना। उन्होंने कहा मुझे उसकी जरूरत नही। वह कहने लगा सुन लो अगर अच्छी बात होगी क़बूल कर लेना और अगर बुरी बात होगी तो रद्द कर देना। उसने कहा ऐ इब्ने हंज़ला अल्लाह के सिवा हरगिज़ किसी से कुछ न मांगना और गुस्से के वक़्त खुद पर क़ाबू रखना।

इंसान की मौत के वक्त इब्लिस का आना और डराना

हदीस नंबर (65): हज़रते अता बिन यासिर ने फ़रमाया : एक शख़्स की जांकनी के वक़्त (मरने के वक़्त) उसके पास इब्लीस आया और उसने कहा अब तू मुझसे नहीं बचेगा।

नबीए पाक ﷺ के साथ शैतान का मक्रो फरेब

हदीस नंबर (66) : हजरत हसन रदीअल्लाहु त'आला अन्हु से रिवायत है कि नबीए पाकﷺ ने इरशाद फरमाया: जिबरईल अलैहिस्सलाम मेरे पास आए और उन्होंने कहा बेशक एक शैतान आपके लिए मक्रो फरेब इख्तियार करता है तो जब आप अपने बिस्तर पर तशरीफ ले जाएं तो आयतुल कुर्सी पढ़ लिया करें।

हज़रते श'अबी से रिवायत है उन्होंने कहा रसूलल्लाहﷺ ने इरशाद फरमाया: मेरे पास एक मर्तबा शैतान आया और झगड़ने लगा, दोबारा फिर आया और झगड़ने लगा मैंने उसके हल्क़ को पकड़ लिया तो क़सम है उस रब की जिसने हक़ के साथ मुझे मबऊस फरमाया मैंने उसको उस वक्त तक ना छोड़ा जब तक उसकी जबान की ठंडक मेरे हाथ में ना महसूस होने लगी। अगर सुलैमान अलैहिस्सलाम की दुआ ना होती तो यक़ीनन वोह मस्जिद में पड़ा होता।

शैतान का हुज़ूर ﷺ को जलाने का इरादा :

हदीस नंबर (67): हज़रते अब्दुर्रहमान बिन अबू लैला से रिवायत है उन्होंने फरमाया एक शैतान हाथ में आग का शोला लिए रसूलल्लाहﷺ के पास आया। उस वक्त आप नमाज पढ़ रहे थे आपने क़याम फरमाया और 'आऊजु बिल्लाहि मिनश्शयतानिर्रजीम' पढ़ा उसके बावजूद वह शैतान नही भागा। इतने में जिबरईल अ़लैहिस्सलाम ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुए और कहा यह पढ़ो :

"أَعُوذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ الَّتِي لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَلَا فَاجِرٌ، مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ وَذَرَأَ وَبَرَأَ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَنْزِلُ مِنْ السَّمَاءِ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَعْرُجُ فِيهَا، وَمِنْ شَرِّ مَا ذَرَأَ فِي الْأَرْضِ، وَمِنْ شَرِّ مَا يَخْرُجُ مِنْهَا، وَمِنْ شَرِّ فِتَنِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ"

"तर्जुमा : मैं जमीन में दाख़िल होने वाले उससे निकलने वाले आसमान से उतरने वाले उसकी जानिब चढ़ने वाले और शबो रोज़ के शर से अल्लाह के उन तमाम कलिमात के ज़रिए पनाह मांगता हूं जिससे कोई नेक व फ़ाजिर तजावुज़ नही कर सकता"

तो सरकार ने इस दुआ़ को पढ़ा, शोला बुझ गया और वोह शैतान मुंह के बल गिर पड़ा।

दिल मे वसवसों का एक दरवाज़ा

हदीस नंबर (68) : हज़रते यहया बिन अबू कसी़र से रिवायत है उन्होंने कहा: इन्सान के दिल मे वसवसों का एक दरवाज़ा है , जिसके ज़रिये वसवसा पैदा होता है।

मलऊ़न होने से पहले इब्लीस का नाम

हदीस नंबर (69) : हज़रत अबू मुसन्ना से रिवायात है उन्होंने कहा : पहले इब्लीस का नाम नाइल था जब उस पर अल्लाह की फटकार पड़ी तो उसका नाम शैता़न रख दिया गया।

क्या इब्लीस अशराफ़े मलाईका (फ़रिश्तों) से था ?

हदीस नंबर (70) : हज़रत इब्ने अ़ब्बास से रिवायत है उन्होंने कहा : पहले इब्लीस का नाम अज़ाज़ील था और वह चार पर वाले अफ़ज़ल मलाइका से था उसके बाद रांदए बारगाह हो गया।

हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम और इब्लीस के बीच मुकालमा :

हदीस नंबर (71): हज़रत जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह से रिवायत हैं उन्होंने कहा जब हज़रते आदम अ़लैहिस्सलाम हिंदुस्तान की सर ज़मीन पर उतारे गए उस वक़्त उनका सर आसमान को छू रहा था, ज़मीन ने अपने रब से आदम अ़लैहिस्सलाम के शक्ल की शिकायत की तो अल्लाह त'आला ने अपना दस्ते कुदरत उनके सर पर रखा तो वह 70 गज़ कम हो गए और हज़रत आदम अ़लैहिस्सलाम अपने साथ खजूर, केला और लीमूँ लेकर आये तो जब वह ज़मीन पर तसरीफ ले आये शैतान की तरफ इशारा करते हुए अपने रब से अर्ज़ किया ए मेरे रब! तूने उसके और मेरे दरमियान अ़दावत पैदा कर दी है अगर तू उसके ख़िलाफ मेरी मदद नही करेगा तो मैं उस पर क़ादिर ना हो सकूंगा। तो अल्लाह ने फरमाया : मैं तुमसे पैदा होने वाले हर बच्चे यानी हर इंसान के साथ एक फरिश्ता मुक़र्रर कर दूंगा, उन्होंने अर्ज़ किया ऐ रब! उस पर कुछ इज़ाफा फरमा दे। अल्लाह ने फरमाया जब तक जिस्म में रूह रहेगी उस वक़्त तक उसके लिए तौबा का दरवाज़ा खुला रहेगा। फिर अर्ज़ किया या इलाही! उस पर कुछ इज़ाफा फरमा दे, तो अल्लाह ने फरमाया मैं एक गुनाह पर एक गुनाह और एक नेकी पर 10 गुना अज्र या जितना मैं चाहूं लिखूंगा। उसके बाद इब्लीस ने बारगाह ए इलाही में अर्ज़ किया ऐ रब! येह तेरा मुकर्रम बन्दा है, अगर तू इसके ख़िलाफ मेरी मदद नही फ़रमाएगा तो मैं उस पर क़ाबू नही पा सकूंगा। तो अल्लाह ने फ़रमाया आदम के लड़कों के बराबर तेरे भी लड़के होंगे उसने अर्ज़ किया ऐ रब इस पर कुछ इज़ाफा फ़रमा दे। अल्लाह ने फरमाया तू उनकी रगों में खून की तरह दौड़ेगा और उनके दिल मे अपना घर (क़ब्ज़ा) बना लेगा, इब्लीस ने कहा ऐ रब! इस पर कुछ और इजाफ़ा फ़रमा तो अल्लाह ने फरमाया :

"और उन पर लाम (लश्कर) बांध ला अपने सवारों और अपने प्यादों का और उनका साझी(शरीक) हो मालों और बच्चों में"।

शैतान इंसान के रगों में

हदीस नंबर (72) : हज़रत अ़ली बिन हुसैन रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने कहा नबीए ﷺ पाक ने इरशाद फ़रमाया - बेशक शैतान इंसान के रगों में खूंन की तरह दौड़ता है।

शैतान से अल्लाह पाक के फरिश्ते मो'मिन की हिफ़ाज़त करते हैं:

हदीस (73) : शैतान से अल्लाह पाक के फरिश्ते मो'मिन की हिफ़ाज़त करते हैं: हज़रते अबु उमामा रदीअल्लाहु अन्हु से रिवायत है, उन्होंने कहा नबीए पाकﷺ ने इरशाद फ़रमाया: हर मोमिन बंदे के साथ 360 फरिश्ते मुक़र्रर है जो उसकी उन तमाम चीज़ों से हिफ़ाज़त करते रहते हैं जिन पर वोह कुदरत नही पाता, सात फ़रिश्ते इंसान की उसी तरह हिफाज़त करते हैं जैसे मौसमे सरमा में शहद के प्याले को मक्खियों से बचाया जाता है। अगर वह फरिश्ते ज़ाहिर हो जाएं तो तुम उन्हें हर नरम और सख़्त ज़मीन पर हाथ को फैलाए हुए और मुंह को खोले हुए देखोगे। अगर बंदा एक लम्हे के लिए अपनी हिफाज़त करने पर मुक़र्रर कर दिया जाए तो शयातीन उसे उचक लेंगे।

हर बंदे के लिए हिफ़ाज़त करने वाले होते हैं

हदीस नंबर (74) : हज़रते अ़ली बिन अबू ता़लिब रदीअल्लाहु त'आला अ़न्हु से रिवायत है, उन्होंने कहा: हर बंदे के लिए हिफ़ाज़त करने वाले होते हैं, हर गिरने वाली दीवार,कुएँ में गिरने और हर क़िस्म की मुसीबत से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं, यहां तक कि जब तक़दीरे इलाही आती है तो वोह हिफ़ाज़ती गिरोह रुख़सत हो जाता है तो तक़दीर जो उसे पहुंचाना चाहती है पहुंचा देती है।

शैतान का सुरमा और उसका थूक:

हदीस नंबर (75) : हज़रत समरह रदीअल्लाहु अ़न्हु से रियावत है, उन्होंने कहा : नबीए पाकﷺ ने इरशाद फ़रमाया: यक़ीनन शैता़न का सुरमा और थूक है , जब इंसान उस का सुरमा लगा लेता है तो उसकी आँखें ज़िक्रे इलाही से ग़ाफ़िल हो जाती है और जब वह उस का थूक चाट लेता है तो उस की ज़बान फ़हश गो हो जाती है।

औरत पर शैतान की हाजिरी

हदीस नंबर (76) : हज़रते सालिम बिन अ़ब्दुल्लाह ने कहा: हज़रते अबू मूसा रदीअल्लाहु त'आला अ़न्हु के पास हज़रते उ़मर रदीअल्लाहु त'आला अन्हु की ख़बर ताख़ीर से पहुंची। आप की बारगाह में एक ऐसी औरत को लाया गया जिस

पर शैतान आता था, आपने उससे हज़रते उ़मर के बारे में पूछा, वह कहने लगी: जब मेरा शैता़न आएगा मैं उनके बारे में बताऊंगी। जब शैता़न आया औरत ने उससे हज़रत उ़मर के बारे में दरयाफ़्त किया (पूछा), उसने कहा: मैंने उन्हें एक चादर लपेटे हुए सदक़े के ऊँट की निगहबानी करते हुए पाया, और वह ऐसे हैं कि जब भी शैता़न उन्हें देखता है औंधे मुंह गिर जाता है, फरिश्ता उनके सामने होता है और रूहुलकुद्स उनकी ज़बान से गोया होते हैं।



Download Free NOW!
शैतान की हिकायत
लेखक
हज़रत मौलाना अबुन्नूर मोहम्मद बशीर साहब
आयत ए क़ुरआन और शैतान
Download Free NOW!
क़ुरआन, हदीस और बुज़ुर्गों की हिकायात की रौशनी में
शैतान की हक़ीक़त और हिकायत
Download Free NOW!
अहले सुन्नत व जमात